I J C R M
International Journal of Contemporary Research In Multidisciplinary

Research Article

हिन्दमहासागर क्षेत्र में गैर-पारंपरिक समुद्री सुरक्षा खतरें और भारत की सामरिक भूमिका

डॉ० अतुल चन्द [1*], राहुल खत्री [2]

[1] विभागाध्यक्ष, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन, राजकीय महाविद्यालय बलुवाकोट, पिथौरागढ़, उत्तराखंड, भारत

[2] शोध छात्र, रक्षा एवं स्त्रातेजिक अध्ययन, राजकीय महाविद्यालय बलुवाकोट, पिथौरागढ़, उत्तराखंड, भारत

Corresponding Author: *डॉ० अतुल चन्द

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.20490645

सारांश

हिन्दमहासागर ऐतिहासिक काल से ही आर्थिक और सामरिक दृष्टि से वैश्विक भू-राजनीति के केन्द्र में रहा है। आज विश्व का लगभग 90 प्रतिशत व्यापार समुद्री मार्गों पर निर्भर है, जिसका एक बड़ा हिस्सा हिन्दमहासागर से गुजरता है हिन्दमहासागर में मुक्त परिवहन के लिये सुरक्षित वातावरण का होना आवश्यक है। वैश्विक ऊर्जा व व्यापार की व्यस्तम् शिपिंग लेनों से घिरे हिन्दमहासागर क्षेत्र में होने वाली अवैध गतिविधियॉ समुद्री सुरक्षा व हितों के प्रति एक गंभीर चुनौती रही है। वैश्विक भूराजनीति में शक्ति संघर्ष के केन्द्र की भूमिका तथा पारम्परिक सुरक्षा खतरों से परे इस क्षेत्र में गैर पारम्परिक समुद्री सुरक्षा खतरे इसके क्षेत्रीय राष्ट्रों के साथ ही बाहरी राष्ट्रों के समुद्री हितों व सुरक्षा को प्रभावित कर रहे है। हिन्दमहासागर क्षेत्र में गैर पारम्परिक समुद्री सुरक्षा सम्बन्धी खतरों में साल दर साल बढ़ोतरी हो रही है, दूसरी ओर राष्ट्रों की समुद्र पर बढती निर्भरता ने समुद्री परिवहन को व्यापार का महत्वपूर्ण साधन बनाया है। इस क्षेत्र में गैर-पारम्परिक सुरक्षा खतरों के रूप में आतंकवाद, समुद्री डकैती, मादक पदार्थो व हथियार की तस्करी, जलवायु परिवर्तन आदि चुनौतियॉ ऊर्जा आपूर्ति, आर्थिक हितों, क्षेत्रीय स्थिरता व मानवीय सुरक्षा के लिए एक गंभीर चुनौती प्रस्तुत करते हैं।

Manuscript Information

- **ISSN No:** 2583-7397
- **Received:** 05-04-2026
- **Accepted:** 30-05-2026
- **Published:** 01-06-2026
- **IJCRM:**5(3); 2026: 508-516
- **©2026, All Rights Reserved**
- **Plagiarism Checked:** Yes
- **Peer Review Process:** Yes

How to Cite this Article

डॉ० अतुल चन्द, राहुल खत्री. हिन्दमहासागर क्षेत्र में गैर-पारंपरिक समुद्री सुरक्षा खतरें और भारत की सामरिक भूमिका. Int J Contemp Res Multidiscip. 2026;5(3):508-516.

Access this Article Online

www.multiarticlesjournal.com

मूल शब्द: रणनीतिक चोक प्वॉइट, लाल सागर, अदन की खाड़ी, सीएमएफ-150, हौथी विद्रोही, IFC-IOR आदि।

© 2026 डॉ० अतुल चन्द, राहुल खत्री. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रस्तावना

वर्तमान में हिन्दमहासागर क्षेत्र का भू रणनीतिक व शक्ति प्रतिस्पर्धा के वातावरण ने इसकी स्थिरता, शांति व सम्प्रभुता को चुनौती दी है। हिन्दमहासागर विगत दशकों में चर्चित और व्यस्तम प्रमुख ऊर्जा आपूर्ति, व्यापारिक व आर्थिक संसाधनों का महत्वपूर्ण समुद्री संचार मार्ग रहा है। प्रगतिशील हिन्दमहासागर क्षेत्र में क्षेत्रीय अस्थिरता, आन्तरिक संद्यर्ष, गृहयुद्ध तथा वैश्विक शक्ति संघर्ष जैसी जटिल रणनीतिक चुनौतियों ने इसके भूरणनीतिक व भू–आर्थिक महत्व को प्रभावित किया है। क्षेत्र में तमाम सुरक्षा संकटों के कारण आज हिन्दमहासागर क्षेत्र में गैर पारम्परिक समुद्री सुरक्षा खतरे, स्वतन्त्र व मुक्त पारगमन के लिये एक वैश्विक चुनौती बना हुआ है।

गैर पारम्परिक समुद्री सुरक्षा खतरे जैसे समुद्री डकैती, समुद्री आंतकवाद, मादक पदार्थो व अवैध हथियारों की तस्करी, अवैध व अनियंत्रित मछली पकडना तथा जलवायु परिवर्तन आदि तटीय व वैश्विक स्तर पर सुरक्षित एवं मुक्त हिन्दमहासागर की प्रतिबद्धताओं में बाधा उत्पन्न करतें है। मुख्यत हिन्दमहासागर में गैर पारम्परिक समुद्री खतरों से भारत समेत अन्य तटीय व द्वीपीय राष्ट्र अधिक प्रभावित हुए है। ये सुरक्षा चुनौतियॉ क्षेत्र के कुछ हिस्सों में व्याप्त अराजकता, गरीबी, कमजोर शासन, आतंकवाद, संघर्ष, अपराधिक घटनाओं सें जुडा हुआ है, और साथ ही जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी खतरे समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र, जैव विविधता, चरम मौसमी घटनाओं तथा मानव सुरक्षा को प्रभावित करते हैं।

हिन्दमहासागर क्षेत्र चारों ओर से अस्थिर, संघर्षशील व आतंकवाद से ग्रसित राष्ट्रों से घिरा हुआ है, मध्य पूर्व से लेकर अफ्रीका के पूर्वी तटों से दक्षिण पूर्व एशिया के तटीय क्षेत्र समुद्री डकैती, आतंकवाद, मादक पदार्थो की तस्करी तथा हथियारों की तस्करी से खूब फलफूल रही हैं और क्षेत्रीय सुरक्षा चुनौतियों को बढावा दे रहे हैं। जलवायु परिवर्तन के कारण अन्य महासागरों की अपेक्षा हिन्दमहासागर अधिक तेजी से गर्म हो रहा है। उत्तरी और पश्चिमी हिन्दमहासागर जलवायु परिवर्तन से प्रभावित क्षेत्र है, हिन्दमहासागर क्षेत्र प्राकृतिक आपदाएं आती रहती हैं क्योंकि बहुत अधिक प्राकृतिक आपदा की घटनाएं हिन्दमहासागर क्षेत्र में होती है जो तटीय अर्थव्यवस्था तथा समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के लिए खतरा बना हुआ है।

हिन्दमहासागर में अन्तर्राष्ट्रीय व क्षेत्रीय सहयोग के जरिए सभी राष्ट्र स्वतंत्र व सयुक्त भागीदारी के रूप से संयुक्त गश्ती अभियान, राहत व बचाव अभियान तथा कार्यकारी संस्था व संगठनों के माध्यम से एक मजबूत रक्षात्मक व निगरानी तंत्र का निर्माण कर रहे हैं परिणामस्वरूप कुछ कमियों के बावजूद इन चुनौतियों को कम करने में सफलता अर्जित की गई है।

हिन्दमहासागर का रणनीतिक वातावरण

वैश्विक ऊर्जा व व्यापार का मुख्य पारगमन केन्द्र हिन्दमहासागर का विशेष आर्थिक व स्त्रातेजिक महत्व है। वैश्विक भूराजनीति के रणनीतिक क्षेत्रों के मामले में हिन्दमहासागर सामरिक दृष्टिकोण से काफी संघर्षशील क्षेत्र है। शिपिंग लेनों का व्यस्तम क्षेत्र आज दुनिया भर के देशों के लिए शक्ति संतुलन का कूटनीतिक हथियार बन चुका है। हिन्दमहासागर क्षेत्र ग्लोबल नार्थ का ग्लोबल साउथ के साथ समुद्री परिवहन को बनाये रखने के लिए एकमात्र समुद्री मार्ग है और यहॉ विश्व का दो-तिहाई हिस्से का व्यापार होता है। हिन्दमहासागर पश्चिम में अफ्रीका महाद्वीप, उत्तर में भारत व मध्यपूर्व से और पूर्व मे आस्ट्रेलिया सें तथा दक्षिण में अटंलांटिक से घिरा हुआ है। यह महासागरीय क्षेत्र अनेक रणनीतिक विशेषताओं और चुनौतियों से घिरा हुआ है यहॉ तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं वाले देश, ऊर्जा व तेल निर्यात अग्रणी राष्ट्र, प्राकृतिक संसाधनों व खनिज सम्पन्न, केन्द्रीय समुद्री मार्ग और क्षेत्र का भौतिक स्वरूप, चोकप्वाइट, राजनैतिक अस्थिरता, हिसंक गैर राज्य तत्व, आर्थिक कमजोरी, गरीबी व निरकुंश शासन आदि ऐसे कई मुख्य कारक है जो समुद्री खतरों के लिये अनुकूल परिस्थितियों का निर्माण कराती है। हिन्दमहासागर की ऐसी भूराजनीतिक महत्ता व चुनौतियॉ वैश्विक महाशक्तियों की स्थायी उपस्थिति व नियंत्रण की शक्ति प्रतिस्पर्धा को बनाये रखने के लिए एक निमंत्रण-पत्र के समान है।

समुद्री परिवहन अन्य परिवहन साधनों की अपेक्षा काफी सस्ता है जिससे राष्ट्रों की निर्भरता समुद्रों पर बढ़ने लगी है। हिन्दमहासागर समुद्री परिवहन के लिए काफी अनुकूल हैं, उष्णकंटिबंधीय जलवायु के कारण यहॉ यातायात हर मौसम निर्बाध चलता है। सामरिक दृष्टि से द्वीपीय राष्ट्रों में उपस्थिति से यहॉ होने वाली सैन्य व नागरिक गतिविधियों पर नजर रखी जा सकती है। हिन्दमहासागर क्षेत्र में संघर्ष व अस्थिरता ने कई पारम्परिक व गैर पारम्परिक समुद्री सुरक्षा खतरों को जन्म दिया है। क्षेत्र में मुक्त प्रवाह पारगमन व जहाजों की सुरक्षा के लिये सैन्य अड्डों व नौ सैन्य उपस्थिति ने वैश्विक प्रतिस्पर्धा को जन्म दिया है। हिन्दमहासागर क्षेत्र में चीन-अमेरिका के बीच शक्ति सतुलन, वैश्विक शक्ति व सामरिक नियंत्रण को बनाये रखने का प्रमुख सामरिक खेल बन चुका है।इस क्षेत्र में चीन की मजबूत सामरिक बढ़त और समुद्री कूटनीति के तहत नौ सैन्य अडडों व सुविधाएॅ प्राप्त करना भारत सहित द्वीपीय राष्ट्र की स्वतंत्रता व अखण्डता के लिये खतरा बनी हुई है।

गैर-पारंपरिक समुद्री सुरक्षा खतरे

शीतयुद्ध काल से ही हिन्दमहासागर अपार व्यापारिक व आर्थिक गतिविधियों के कारण ही आज वैश्विक भूराजनीति के केन्द्र में है। इसका इतिहास, भौगोलिक संरचना, प्राकृतिक संसाधन और क्षेत्रीय राजनीति ने इसके वर्तमान रणनीतिक स्वरूप का निर्माण किया है। हिन्दमहासागर में शक्ति संघर्ष व पारम्परिक सुरक्षा खतरों के साथ ही गैर पारम्परिक समुद्री सुरक्षा खतरे वैश्विक समुद्री सुरक्षा के लिये गंभीर चुनौती पेश कर रहे है। यह एक ऐसा क्षेत्र है जहॉ अदन की खाड़ी, फारस की खाड़ी, बॉब अल मन्देव, गिनी की खाडी, अफ्रीकी तट तथा मलक्का व सिंगापुर जलडमरूमध्य जैसे रणनीतिक बिन्दुओं पर आतंकवाद, समुद्री डकैती, मादक पदार्थो व हथियारों की तस्करी, अवैध अप्रावसन आदि अवैध गतिविधियॉ बिना व्यवधान के बड़ी मात्रा में होती आ रही हैं।

हिन्दमहासागर में तमाम रणनीतिक बिन्दु हैं जो गैर-पारम्परिक समुद्री खतरों के लिये बेहद सुरक्षित व चर्चित रहे है। यहॉ अदन की खाडी, लाल सागर, सोमालिया तट, दक्षिण व दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र समुद्री डकैती, हथियारों व मादक पदार्थो की तस्करी के प्रमुख हॉटस्पाट माने जाते है। इन क्षेत्रो में निरंकुश शासन प्रणाली व आर्थिक स्थिति, गरीबी, बेरोजगारी व कमजोर तटीय व समुद्री सुरक्षा तंत्र स्वतंत्र अवैध

© 2026 डॉ० अतुल चन्द, राहुल खत्री. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

गतिविधियों का एक प्रमुख कारण है। जलवायु परिवर्तन सम्बन्धी प्रभाव हिन्दमहासागर के जलीय पारिथितिकी तंत्र, द्वीपीय व तटीय क्षेत्रों के अस्तित्व के लिये प्रमुख चुनौती बने हुए है।

वर्तमान में हिन्दमहासागर क्षेत्रीय राष्ट्रों के मध्य संघर्ष इजराइल-फिलिस्तीन ईरान संघर्ष व हौथी विद्रोह के कारण यहॉ समुद्री डकैती हथियारों की तस्करी में बढ़ोतरी हुई है। जिससे सुरक्षा व्यवस्था खराब हुई है और क्षेत्र को सामरिक प्रतिद्वन्दिता का सामना कर रहा है। म्यामार व अफगानिस्तान में राजनैतिक अस्थिरता के कारण जहा एक और अफगानिस्तान से मादक पदार्थो की तस्करी में कमी तो वह दूसरी ओर म्यामार के जरिये इसकी अवैध तस्करी पर भारी वृद्धि हुई जो गैर राज्य हिंसक अभिनेताओं का प्रमुख हथियार है। रूस यूक्रेन युद्ध के प्रभाव ने वैश्विक राजनीति के साथ हिन्दमहासागर के क्षेत्रीय सन्तुलन को भी प्रभावित किया है। आज विश्व आर्थिक, सामरिक स्थिरता व सुरक्षा के लिए हिन्दमहासागर की महत्ता को व्यापक रूप से स्वीकार कर रहा है और वैश्विक गुरूत्व केन्द्र आज यूरोप से हटकर हिन्दमहासगर की ओर स्थांतरित हो रहा है।

हिन्दमहासागर क्षेत्र में व्याप्त गैर पारम्परिक समुद्री सुरक्षा खतरें- समुद्री डकैती व सशस्त्र डकैती

समुद्री परिवहन की गतिविधियों के शुरूआती दौर से ही समुद्री डकैती का इतिहास हिन्दमहासागर से जुड़ा हुआ है। ऐतिहासिक काल में समुद्री क्षेत्रों में डकैती बहुयात मात्रा में प्रचलित व भयावह घटना थी। हिन्दमहासागर क्षेत्र में अदन की खाडी, गिनी की खाडी, फारस की खाडी, अफ्रीकी पूर्वी तट, सोमालिया तट व हॉर्न ऑफ अफ्रीका, मलक्का जलडमरूमध्य आदि वे क्षेत्र हैं जहॉ समुद्री डकैती सबसे अधिक प्रचलित रही है। अन्य क्षेत्रो की तुलना में अदन की खाड़ी, सोमालिया तट व मलक्का स्टेट क्षेत्रों में अपेक्षाकृत अधिक घटनाएॅ होती है। हॉल के कुछ वर्षो में डकैती व सशस्त्र डकैती की घटनाओं में रोकथाम के बाद अभी बढ़ोतरी हुई है, क्योंकि वैश्विक महामारी तथा लाल सागर क्षेत्र में उपजे संकट के कारण हिन्दमहासागर में समुद्री खतरे बढ गये हैं। इस समुद्री क्षेत्र में वैश्विक राष्ट्रों द्वारा द्विपक्षीय, त्रिपक्षीय सहयोग व क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों ने संयुक्त नौ सेन्य अभियानों द्वारा समुद्री डकैती व सशस्त्र डकैती के विरूद्ध कार्यवाही की जा रही है। 2008-09 में भारत, चीन, दक्षिण कोरिया, जापान आदि प्रमुख देशों ने समुद्री डकैती के विरूद्ध संयुक्त नौसेनिक प्रयास किये। यूरोपीय संघ द्वारा ऑपरेशन अटलांटा दिसम्बर 2008 में ही शुरू किया गया जो संयुक्त नौ बलों की सहायता से कई डकैती की घटनाओं को विफल करने में सफल रहा है।

1980के दौर से ही समुद्री डकैती से उभरने वाले खतरो से सम्बन्धी मुद्दों की ओर अन्तरर्राष्ट्रीय समुद्री संगठन ने विशेष ध्यान दिया। हिन्दमहासागर में 2008 से 2012 के दौर में समुद्री डकैती अपने चरम पर थी। कई वर्षो तक ब सोमाली डाकू हमले के न होने के बाद जनवरी 2023 में हिन्दमहासार को उच्च जोखिम वाले क्षेत्र से हटा दिया गया है। सिगापुर स्टेट एक समुद्री डकैती के एक नये केन्द्र के रूप में उभर रहा है, जो चिंता का विषय है, जहा साल दर साल ऐसी घटनाएं बढ़ती जा रही है। 2022 के बीच रीकैप [RECAAP-ISC] की रिर्पाट से पता चलता है कि सिंगापुर स्ट्रेट में घटनाओं में बढोतरी हुई है यहॉ 2021 में 49 तथा 2022 में 55 घटनाएॅ हुई और चेतावनी दी कि क्षेत्र में समुद्री डकैती फिर से बढ सकती है। दिसम्बर 2023 में सोमाली डाकुओं द्वारा 2017 के बाद एक सफल हमला किया जिसमें एक वाणिज्यिक जहाज को हाईजैक किया गया जिसको भारतीय नौ सेना ने ऑपरेशन संकल्प के तहत मार्च 2024 को रिहा किया था।

2017 तक हिन्दमहासागर क्षेत्र सशस्त्र डकैती से मुक्त रहा परन्तु कुछ प्रयास बावजूद इन्हें नौसैनिक हस्तक्षेप के कारण असफल किया गया। हिन्दमहासागर के कुछ हिस्सों जैसे बंगाल की खाड़ी, मलक्का जलडमरूमध्य व श्रीलंका तट पर सशस्त्र डकैती की घटनाए दर्ज की गई। चर्चित हॉट स्पाट के क्षेत्रों में यूरोपीय नौ सेना बल, नाटो व संयुक्त कार्य दल151[CTF-151] के प्रयास के माध्यम से 2017 तक वैश्विक पॉयरेसी की घटनाएं अपने सबसे निचले स्तर में थी, परन्तु कुछ स्थानों पर छोटे पेमाने पर चोरी की घटनाएं बनी रहीं। आईएफसी-आईओआर की एक रिपोर्ट के अनुसार हिन्दमहासागर में समुद्री डकैती की घटनाएं 2021 में 168, 2022 में 161 तथा 2023 में 117 तक दर्ज की गई। अफ्रीका महाद्वीप में अस्थिरता के कारण हथियारों की तस्करी जैसे अपराधिक बाजार लगातार बढे है। हॉल के वर्षो में मध्य पूर्व में अस्थिरता व हौथी विद्रोहियों द्वारा पश्चिमी हिन्दमहासागर में गतिविधियों ने गंभीर सुरक्षा चुनौतियॉ पेश की है। जिससे समुद्री व सशस्त्र डकैती जैसी समुद्री चुनौतियों के बढ़ने की पूर्ण सम्भावनाएॅ बनती ही जा रही हैं।

समुद्री आतंकवाद

हिन्दमहासागर क्षेत्र में आंतकवाद एक गंभीर समस्या बना हुई है। हिन्दमहासागर के लगभग सभी राष्ट्र किसी न किसी प्रकार से आतंकवाद से ग्रसित रहे है। समुद्री आतंकवाद का विकास क्षेत्रीय आतंकवाद के साथ प्रबल रूप से सीधा सम्बन्ध रखता है क्योकि समुद्र में होने वाली किसी भी प्रकार की हिंसक घटनाएॅ तटीय व भीतरी गैर राज्यों तत्वों द्वारा ही संचालित की जाती है। शीतयुद्ध काल के बाद से ही हिन्दमहासागर क्षेत्र में सबसे अधिक संघर्ष हुए जिसने आतंकवाद को जन्म दिया और इसे वैश्विक आंतकवाद का केन्द्र भी माना जाता है। क्षेत्र में स्थिरता की कमी, हॉर्न ऑफ अफ्रीका और अरब प्रायद्वीप में हिंसक गतिविधियॉ गैर राज्य हिंसक तत्वों के लिये प्रजनन स्थल बन चुके है। पहले से समुद्री डाकुओं से प्रभावित क्षेत्र में अस्थिरता के साथ बढ़ता समुद्री आतंकवाद क्षेत्र का एक भयावह खतरा है। हिन्दमहासागर क्षेत्र में मुख्यत सोमालिया, मध्य पूर्व, पश्चिम एशिया, पूर्वी अफ्रीका व दक्षिण एशिया क्षेत्र आतंकवादी संगठनों के आश्रय के केन्द्र बने हुए हैं। समुदी आतंकवाद में इनके द्वारा बन्दगाहों, लंगर वाले जहाज, संवेदनशील चोक प्वाइटों आदि को निशाना बनाया जाता है। मार्च 2020 में इस्लामिक स्टेट द्वारा रणनीतिक मोजाम्बिक बन्दरगाह और मालद्वीप के कमजोर बन्दरगाह, विनिर्माण, कर्मियों व जहाजों पर हमला किया गया। क्षेत्र में इस्लामिक स्टेट, बोकोहराम, अलशबाब, अलकायदा व अन्य छोटे आतंकवादी समूह चर्चित रहे है। हिन्दमहासागर में आतंकवाद की घटनाएं 2000 से होती आ रही है, अक्टूबर 2000 में यूएस कोल पर हुए हमले को आधुनिक समुद्री आतंकवाद की शुरूआत कहा जाता है। जिसमें 17 अमेरिकी नौ सेनिक मारे गये थे।इसके पश्चात अलग-अलग अन्तराल में ये हमले होते रहे। संयुक्त राज्य अमेरिका में 9/11 तथा भारत में 26/11 में हुए समुद्री आतंकी हमले के बाद विश्व भर के सभी राष्ट्रों ने समुद्री परिवहन

© 2026 डॉ० अतुल चन्द, राहुल खत्री. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

की आतंकवाद से सुरक्षा के लिए ठोस कदम उठाये हैं। अमेरिका ने हिन्दमहासागर में नौ सैन्य विस्तार कर combined task force 150 का गठन किया और हॉर्न ऑफ अफ्रीका में अक्टू 2001 से आपरेशन इंडयूरिंग फ्रीडम चलाया था। सभी राष्टों की क्षेत्र में सक्रियता बढ़ने लगी। नाटों 2009 में operation ocean shield चलाया गया और यूरोपीय संघ ने operation Atlanta की शुरूआत की। वर्ष 2016 से यमन, लाल सागर व अदन की खाड़ी में ईरान समर्थित हौथी विद्रोहियों द्वारा जहाजों पर मिसाइल और ड्रोन के द्वारा हमले किये जा रहे है[iii] आईएसआईएस-के, अलशबाब, बोकोहराम, हौथी, अलकायदा, हमास, जैश-ए-मोहम्मद, हिजुबुल्लाह व अन्य आतंकी नेक्सस द्वारा सम्पूर्ण हिन्दमहासागर को प्रभावित किया जा रहा है। जो मुक्त प्रवाह पारगमन व क्षेत्रीय सुरक्षा को चुनौती दे रहे है।

दूसरी ओर दक्षिण पूर्व एशिया में स्थित अबूसययाफ व दूसरे आतंकी सगठनों द्वारा मलक्का जलडमरूमध्य से गुजरने वाले जहाजों पर हमला किया जाता है। आज अन्य क्षेत्रों की तुलना मे हौथी आक्रमण पश्चिमी हिन्दमहासागर मुख्यत लाल सागर और बाब अल मन्देव में सबसे बडा आंतकवादी खतरा है। हौथी विद्रोहियों द्वारा जहाजों पर हमले के लिये ड्रोन, मिसाइलों व आधुनिक तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है, अक्टू 2023 व 2024 में इजराइल और उसके सहयोगी राष्ट्र अमेंरिका के युद्धपोतों और तेल टैंकरो पर मिसाइलें दागी गई थी[iv] अमेरिका ने इसके जवाब में दिसम्बर 2023 को operation prosperity guardian नाम से अन्तर्राष्टीय नौसेनिक गठबंधन बनाया और 2024 में इनके ठिकानों पर जवाबी हमले किये। साथ ही सउदी अरब, यूएई, फ्रॉस व ब्रिटेन और भारत नौ सैनिक गश्ती अभियान द्वारा क्षेत्र की सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्ध रहे है।

मादक पदार्थो व हथियारों की तस्करी

वैश्विक स्तर पर हिन्दमहासागर क्षेत्र अवैध मादक पदार्थो की तस्करी जैसे चर्चित अपराध का मुख्य केन्द्र रहा है। हिन्दमहासागर उत्तर में स्थित गोल्डन क्रिसेंट(अफगानिस्तान,ईरान,पाकिस्तान) व दक्षिण पूर्व एशिया में गोल्डन ट्राएंगल (म्यांमार,थाईलैण्ड,लाओस) दुनिया में मादक पदार्थो के सबसे बड़े उत्पादन केन्द्र है। इसका प्रभाव क्षेत्र यूरोप, एशिया, दक्षिण पूर्व एशिया, चीन से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय स्तर तक फैला हुआ है। मादक पदार्थो में हेरोइन, कोकीन और हशीश जैसे पदार्थो का एक बड़ा हिस्सा समुद्री रास्ते से तस्करी कर अन्य राष्ट्रों तक पहुंचाया जाता है। अफगानिस्तान से होने वाली होने वाली तस्करी यूरेशिया, यूरोप, पश्चिम एशिया भारतीय पूर्वी तटीय क्षेत्रों को जाती है। संयुक्त राष्ट्र के ड्रग एंड क्राइम ब्यूरो की रिर्पोट के अनुसार 2022 तक अफगानिस्तान में अफीम विश्व के कुल उत्पादन का 90 प्रतिशत था, हॉल ही में तालिबान शासित सरकार द्वारा पोस्ता की खेती पर प्रतिबंध के बाद इसका उत्पादन 2022 में 223000 से घटकर 2023 में 47000 हेक्टेयर रहा, 95 प्रतिशत की गिरावट आई[v] परन्तु अभी भी अवैध रूप से वैश्विक हेरोइन की सप्लाई अफगानिस्तान पर निर्भर है। म्यांमार पहली बार अफगानिस्तान को पछाड कर अफीम उत्पादन की श्रेणी में पहले स्थान पर रहा [vi]निरंकुश म्यामार में साल 2021 के गृहयुद्ध तथा तख्तापलट के बाद यहॉ मादक पदार्थो के उत्पादन में काफी वृद्धि हुई है। जहॉ इसकी खेती में 36 प्रतिशत की वृद्धि हुई है और आज यह दुंनिया का सबसे बड़ा अफीम उत्पादक देश बना हुआ है। 2019 में वैश्विक महामारी के चलते भू कनेक्टविटी में पांबदी से हिन्दमहासार क्षेत्र में इसका अवैध व्यापार खूब फैलने लगा और इस दौरान यूरोप, लैटिन अमेरिका, उत्तरी अमेरिका, दक्षिण पूर्व एशिया के बन्दरगाहों पर समुद्री जलमार्गो से अवैध मादक तस्करी को जब्त की गई खपत में 18 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि हुई है। जो यहॉ की तटीय व क्षेत्रीय राष्ट्रों की आर्थिक व सामाजिक जीवन को प्रभावित कर रहा है। मुख्यत अफ्रीकी देशों में इसकी अत्यधिक खपत व प्रभाव के चलते इसके पूर्वी तटों को हेरोइन तट कहा जाता है। गैर राज्य हिंसक तत्वों व चरमपंथी संगठनों के लिए अफीम धन प्राप्त करने का महत्वपूर्ण स्रोत रहा है। कुछ वर्षो से गोल्डन ट्रॉयगल क्षेत्र में अन्य नशीली दवाओं की अपेक्षा मेथामफेटामाइन अधिक मात्रा में तैयार की जा रही है। मौजूदा समय में सबसे बड़ी चुनौती मेथेमफेटामीन का सबसे अधिक उपयोग होना है, यह पूर्वी व दक्षिण पूर्वी एशिया में सबसे अधिक इस्तेमाल होने वाली नशीली दवा बनी हुई है। पूर्वी और दक्षिण पूर्व एशिया में 2024 में 236 टन मेथामफेटामाइन जब्त की जो पिछले वर्ष की तुलना में 24 प्रतिशत से अधिक था[vii]। गोल्डन क्रिसेंट में उत्पादित नशीले पदार्थो की बहुत कम मात्रा जब्त की जाती हैं, इसका मतलब इसका एक बड़ा हिस्सा बाजार में तस्करी के जरिये उपलब्ध कराया जाता है। 2023 में अफगानिस्तान में अफीम उत्पादन लगभग 333 टन रहा जो 2022 में 6200 टन की तुलना में बेहद कम रहा तथा 2024 में 433 टन की वृद्धि रही[viii]

हिन्दमहासागर में शक्ति प्रतिस्पर्धा के दौर से ही हथियारों ही तस्करी होती आई है, क्षेत्र में जारी संघर्ष में हथियार अवैध रूप से समर्थित राष्ट्र को पहुचाए जाते रहे हैं अफगान-सोवियत युद्ध, अफ्रीकी ग्रहयुद्ध, यमन संघर्ष, इजराइल-फलिस्तीन-हमास संघर्ष के दौरान बडी मात्रा में हथियारों की तस्करी होती रही है। जो डकैती, आतंकवाद और क्षेत्र में गैर राज्य अभिनेताओं से जुडी हुई है, हौथी विद्रोह के कारण ईरान से बड़ी मात्रा में हथियारें की तस्करी हुई है संयुक्त नौ सेना बल ने कई बार इन्हें जब्त भी किया है। 2022 व 2023 में अमेरिकी बलों ने एके 47, मिसाइल व मशीन गन, ड्रोन पार्ट, विस्फोट आदि से भरी नावें जब्त की जो ईरान द्वारा हौथी विद्रोहियों को मुहैया कराई जा रही थी[ix] ओमान की खाडी में यमन से सोमालिया तक हथियारों की तस्करी होती आ रही है जिन्हें अफ्रीका के भीतरी राज्यों तक पहुंचाया जा रहा है। 2016 से 2023 के बीच क्षेत्र में अवैध हथियारों की तस्करी में भारी वृद्धि हुई हुई है। 2021-23 में इस दौरान 70से अधिक एंटी टैक गाइडेड मिसाइल, 200 करीब रॉकेट लॉचर, भारी आमुन्सन के साथ राइफलें और मशीन गन जब्त की गई। 2019 और 2023 में भारतीय कोस्ट गार्ड ने पाकिस्तान ने हथियारों की तस्करी को रोका हैं[x]

जलवायु परिवर्तन

जलवायु परिर्वतन पृथ्वी पर जीवन व्यापन के लिये गंभीर चुनौतियों बन चुका है। हिन्दमहासागर क्षेत्र अन्य महासागरों की तुलना में तेजी से गर्म हो रहा है,जिसका व्यापक कुप्रभाव उत्तरी व पश्चिमी हिन्दमहासागर में देखा गया है। जिससे यहॉ समुद्री स्तर बढना समुद्री ऊष्मीय तंरगें, प्राकतिक आपदाएं, समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र व जैव विविधता के घातक परिणाम सामने आयें है। महासागर जलवायु परिवर्तन को स्थिर व हमारे अनुकूल बनाये रखने में बेहद योगदान देते है। महासागर हमारे वातावरण में अतिरिक्त गर्मी तथा ऊष्मा का 90

© 2026 डॉ० अतुल चन्द, राहुल खत्री. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

प्रतिशत भाग अवशोषित करते हैं, इसलिए महासागरों को हमारी पृथ्वी का सबसे बड़ा कार्बन सिंक कहा जाता है। मानवीय हस्तक्षेप को महासागरों में जलवायु परिवर्तन प्रभाव का सबसे बड़ा कारण माना गया है। यहॉ अनियंत्रित रूप से निर्माण कार्य, नौ सेन्य व नागरिक गतिविधि, युद्धाभ्यास तथा बढता सैन्यीकरण ने इसके जल और पारिस्थिति तंत्र को दूषित किया है।

हिन्दमहासागर के सतही जल के तापमान में वृद्धि 2020 से 2100 के बीच 1.7 डिग्री सेल्सियस से 3.8 डिग्री सेल्सियस बढ़ने की उम्मीद है[xi] ताप में वृ िद्ध के कारण कोरल रीफ व ब्लीचिग, समुद्री वनस्पति, प्रवाल भित्तियॉ व घास जल्दी से नष्ट हो रही है, जिससे कई समुद्री जीव व प्रजातियॉ विलुप्त होने के कगाार पर पहुंच चुकी है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन ने चेतावनी दी है कि अगर महासागरों का तापमान इसी गति के साथ बढ़ता गया तो आधा से अधिक समुद्री प्रजातियॉ 2100 तक विलुप्त हो जायेगी[xii] जो मत्स्य उघोग, खाद्य श्रंखला, व जैव विविधता के लिये भारी क्षति है।

बढते तापमान के कारण समुद्री ऊष्मा तंरगों में वृद्धि हुई है जिससे चरम मौसमी घटनाओं में तेजी आई है समुद्री ऊष्मा लहरे तीव्र चक्रवात से जुडी हुई है। हिन्दमहासागर की ऊष्मा प्रति दशक 4-5 जेटा जूल की दर से बढ रही है और भविष्य में प्रतिदिन 16 से 22 जेटा जूल की दर से बढने की उम्मीद है[xiii] जिससे मौसम में बदलाव हुआ है जो समुद्री स्तर में बढोतरी का एक मुख्य कारण है। समुद्री पानी में गर्मी का विस्तार महासागरों में जलस्तर के बढनें का सबसे बडा कारण रहा है जो समुदी बर्फ और ग्लेशियर से भी अधिक प्रभावी है। इसके कारण तटीय क्षेत्रों में भूस्खलन, बाढ, चक्रवात, तूफान आदि तमाम घटनाओं ने प्रभावी रूप सें तटीय अर्थव्यवस्था, ढॉचागत निर्माण, आर्थिक नुकसान के साथ हताहतों की घटनाओं में व्यापक वृद्धि की है। 2020 में चक्रवात अम्फान ने भारत और बांग्लादेश में 100 से अधिक लोगों की मृत्यु व 50 लाख से अधिक को प्रभावित किया जिसमें लगभग 14 अरब डॉलर का नुकसान हुआ था तथा 2023 में चक्रवात फ्रेडी से मोजाम्बिक और माल्वी में 600 से अधिक लोगों की हानि हुई थी[xiv] हिन्दमहासागर प्राकृतिक आपदाओं से प्रभावित सबसे बड़ा क्षेत्र माना जाता है, विश्व की लगभग 70 प्रतिशत घटनाएं यहॉ होती है। इसके अलावा हिन्दमहासागर में पर्यावरणीय खतरे जैसे तेल रिसाव, प्लास्टिक अपशिष्ट जल और ध्वनि प्रदूषण आदि समुद्री जीवन और समुद्री पारिस्थितिकी तंत्र के लिए नुकसानदायक हैं।

अवैध, अनियमित व अनियंत्रित मछली पकडना

हिन्दमहासागर में पश्चिमी हिन्दमहासागर, अरब सागर, बंगाल की खाड़ी तथा द्वीपीय राष्ट्र तथा दक्षिण पूर्व एशियाई क्षेत्र अवैध व अनियंत्रित मछली पकड़ने के हॉटस्पॉट बने हुए है। खाद्य एवं कृषि संगठन के अनुसागर पूर्वी अफ्रीका के तटों पर आईयूयू फिसिंग सबसे अधिक मात्रा में होती है इसे एक गैर पारम्परिक समुद्री अपराध की श्रेणी में रखा गया है। इसका हानिकारक प्रभाव केवल पर्यावरण तक ही सीमित नही है यह आर्थिक, सामाजिक के साथ सुरक्षा के लिये एक प्रमुख चुनौती है। हिन्दमहासागर में 2000 के दशक में यह एक गंभीर समस्या ब
न चुकी थी।

हिन्दमहासागर में येलोफिन टूना, दुनिया का सबसे लाभदायक मत्स्य पालन और सबसे अधिक खतरे वाली प्रजाती रही है। Indian ocean tuna commission[IOTC] के अनुसार टूना का 30 प्रतिशत से अधिक हिस्सा आईयूयू फिशिंग से प्रभावित है यह आयोग टूना व उससे सम्बन्धित मछलियों के संरक्षण का काम करता है।

महासागरों क्षेत्र में प्रतिबन्धित क्षेत्रों व अन्तर्राष्ट्रीय समुद्री सीमाओं के बाहर जाकर व अन्तर्राष्ट्रीय नियमों के विरूद्ध तथा प्रतिबन्धित मछलियॉ पकडना समुद्री अपराध के अर्न्तगत आता है। हिन्दमहासागर में अफीका के तट, श्रीलंका, मालद्वीप भारत, बांग्लादेश, इडोनेशिया आदि राष्टों की मछली उद्योग पर अधिक निर्भर है। सबसे अधिक आईयूयू फिशिंग सोमालिया, मोजाम्बिक और मेडागास्कर तथा उत्तरी हिन्दमहासागर क्षेत्र में भारत-श्रीलंका-मालद्वीव के समुद्री क्षेत्रों में होती है। इन क्षेत्रों में अवैध फिशिंग के मामले मे क्षेत्र जहाजों के साथ चीन, यूरोप से आये जहाज भी मछलियॉ पकड़ते है। सोमालिया के तट को आईयूयू फिशिंग का हॉटस्पाट कहा जाता है। जहॉ हर साल 300 मिलियन डॉलर का नुकसान होता है [xv]

हिन्दमहासागर में आईयुयू को रोकने के लिये क्षेत्रीय ओर अन्तर्राष्टीय स्तर पर कई प्रयास किये गये है पर फिर भी चुनौतिया बनी हुई है, संगठनों द्वारा जहाजो पर प्रतिबन्ध, जुर्माना, जब्ती तथा कानूनी कार्रवाई के विशेष प्रावधान हैं। इसके साथ ही नियमित समुद्री गश्त भी की जाती है।

समुद्री साइबर सुरक्षा

आईएमओ के अनुसार समुद्री साइबर जोखिम से तात्पर्य उस सीमा से है, जिस तक किसी प्रौघोगिकी परिसंपति को किसी संभावित परिस्थिति या घटना से खतरा हो सकता है, जिसके परिणाम स्वरूप सूचना व प्रणालियों के दूषित, खो जाने या समझौता हो जाने के परिणाम स्वरूप शिपिंग से सम्बधित परिचालन, सुरक्षा, संरक्षा विफलताएं हो सकती है[xvi] समुद्री साइबर हमला मुख्यत समुद्री सूचना प्रणाली, जहाजों, परिचालन प्रणाली, बन्दरगाहों और अन्य समुद्री अवसंरचनाओं पर तकनीकी माध्यम से हमला करना है। जिसमें समुद्री सुरक्षा सें जुडी अन्य प्रणालियों को निशाना बनाया जाता है। हिन्दमहासागर क्षेत्र में समुद्री प्रणालियों पर साइबर हमलों की घटनाएं एक चिन्ता का विषय हैं, समुद्री साइबर हमले हिन्दमहासागर में एक नई समुद्री चुनौती के रूप उभरी है, जो अर्थव्यवस्था, व्यापार और राष्ट्रीय सुरक्षा को प्रभावित करती है। बढ़ती तकनीकि के चलते आज जहाजों की प्रणाली इलेक्ट्रॉनिक सिस्टम, जीपीस, सेंसर और इंटरनेट पर आधारित हो गये है। समुद्री परिवहन में डिजिटलाइज़ेशन और ऑटोमेशन बड़ी तेजी से बड़ा है। हैकिंग, फिशिंग, रैसमवैयर, मैलवेयर, जीपीस ट्रेकिंग आदि के माध्यम से समुद्री नेवीगेशन, संचार लॉजिस्टिक डाटा, आपरेटिंग सिस्टम तथा जहाजों की दिशा को प्रभावित किया जा रहा है। हिन्दमहासागर अपने उच्च व्यापार और सामरिक महत्व के कारण इन खतरों के प्रति विशेष रूप से संवेदनशील है, सबसे अधिक चिन्ताजनक साइबर हमलों में जीपीस स्पूफिग, एआईस हेरफेर, रैनसमवेयर और बन्दरगाहों पर साइबर हमले है।

हिन्दमहासागर में साइबर हमलों की शुरूआत 2010 से माना जाता है जब सोमाली डाकुओं द्वारा जहाजो के नेवीगेशन सिस्टम को हैक कर लिया गया था। जून 2017 में अधिकारिक तौर पर हिन्दमहासागर क्षेत्र में रूस समर्थित Notpetya attack[Maersk case] अब तक का

© 2026 डॉ० अतुल चन्द, राहुल खत्री. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

सबसे बडा साइबर हमला था[xvii] जिसका असर पुरी दुनिया पर पड़ा, A.P MOLLAR-MAERSK सबसे बड़ी ग्लोबल कंपनी थी और इसके हिन्दमहासागर में भी बड़े पोर्ट टर्मिनल थे, जिसे लगभग 300 मिलियन से अधिक का नुकसान झेलना पड़ा। इसने पूरे विश्व की समुद्री आपूर्ति श्रंखला को बुरी तरह प्रभावित किया। इसके पश्चात ही हिन्दमहासागर में साइबर हमले बढ़ने लगे जिसके देखते हुए आईएमओ ने साइबर रिस्क मैनेजमेंट को अनिवार्य कर दिया था। 2024 में स्लाइडविंडर जासूसी समूह ने मालद्वीव, म्यांमार, भारत, बांग्लादेश समुद्री पोर्ट और सुविधाओं को प्रभावित किया था।

भारत की सामरिक भूमिका

हिन्दमहासागर क्षेत्र में गैर पारम्परिक समुद्री खतरे का सबसे अधिक दुष्प्रभाव तटीय तथा द्वीपीय राष्ट्रों की अर्थव्यवस्था, सामाजिक जीवन एवं सुरक्षा पड़ पड़ा है, क्योंकि इनकी तटीय रेखाओं का निर्धारण इसके जल से ही होता है। भारत हिन्दमहासागर में किसी भी संकटकालीन परिस्थिति में नेट सुरक्षा प्रदाता व प्रथम प्रतिक्रिया कर्ता राष्ट्र के रूप में अग्रणी राष्ट्र की भूमिका में रहा है और संबद्ध राष्ट्र भारत की इस भूमिका पर भरोसा और पूर्ण समर्थन भी कर रहे हैं। भारत ने हिन्दमहासागर क्षेत्र में राष्ट्रों के साथ स्वतंत्र व सामूहिक सहयोग तंत्र, संगठन, एजेंसी आदि के माध्यम से गैर पारम्परिक समुद्री खतरों से निपटने में नेतृत्वकारी भूमिका का निर्वहन किया है।

हिन्दमहासागर क्षेत्र गैर पारम्परिक समुद्री खतरों से ग्रसित सबसे बडा क्षेत्र रहा है। हिन्दमहासागर क्षेत्र में गतिशील भूरणनीतिक व भूराजनीतिक वातावरण इन समुद्री खतरों का सबसे बड़ा समर्थक रहा है। भारत की विकसित अर्थव्यवस्था, प्रमुख शक्ति, राष्ट्रीय सुरक्षा व समुद्री व तटीय सुरक्षा को सदृढ व मजूबत बनायें रखने के लिये इन खतरों का समाधान हेतु नीतियॉ बेहद आवश्यक है। भारत हिन्दमहासागर में अपनी समुद्री सुरक्षा रणनीति के तहत स्वतंत्र, क्षेत्रीय कूटनीति, रक्षा क्षमताओं तथा क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की ओर ध्यान केंद्रित करता है। हिन्दमहासागर के तटीय राष्ट्रों, छोटे द्वीपीय राष्ट्रों के सीमित संसाधन और अपर्याप्त भौतिक क्षमताओं तथा उनके कमजोर सुरक्षा तंत्र ने समुद्री सुरक्षा चुनौतियों से मुकाबला करने के लिये भारत पर निर्भर किया है। भारत हिन्दमहासागर में क्षेत्र में प्रथम सुरक्षा प्रदाता राष्ट्र के रूप में अपनी पहचान बना चुका है। भारत ने वैश्विक महामारी कोविड –19 के काल में मिशन सागर के तहत श्रीलंका, मालद्वीव, मेडागास्कर, कोमोरोस, मारीशस आदि राष्ट्रों में खाद्य सामग्री, दवाई, पानी के साथ ही बचाव व अन्य राहत सामग्री की सहायता की। भारत ने हिन्दमहासागर में आपदा व बचाव राहत अभियानों के माध्यम से हिन्दमहासागर के तटीय व द्वीपीय राष्ट्रों को सहायता मुहैया कराई है इन मामलों में भारत हमेशा पहले प्रत्युतर कर्ता की भूमिका में रहा है। इसके तहत भारत अपने समुद्री पडोसियों के साथ आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को गहरा करना चाहता है उनकी समुद्री सुरक्षा क्षमताओं के निर्माण में सहायता करना चाहता है इसके लिए भारत सूचनाओं के आदान-प्रदान, तटीय निगरानी, बुनियादी ढॉचे के निर्माण और उनकी क्षमताओं को मजबूत करने में सहयोग करेगा। भारत हिन्महासागर में विभिन्न संस्थाओं, एंजेसी तथा संगठनों के माध्यम से क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की भावना को प्राथमिकता देता रहा हैं, भारत अरब सागर मे समुद्री डकैती, आतंकवाद तथा हथियारों की तस्करी जैसी चुनौतियों से निपटने के लिये वर्ष 2008 से उपस्थित है। भारत आपरेशन संकल्प के तहत हिन्दमहासागर में 35 से अधिक जहाज और 11 पनडुब्बियॉ तैनात किये थे जिसमें 100 से अधिक बोर्डिग आपरेशन किये जिसमें सैकडो नाविको और करोडों डालर के व्यापारिक जहाजों को संकट से बचाया है[xviii] भारत के 2 जहाज अदन की खाड़ी में और 10 जहाज पश्चिमी और उत्तरी अरब सागर में हर समय तैनात रहते हैं। जो ताकत और तैनाती के मामले में पिछले वर्षो की तुलना में कई अधिक है। अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देते हुए जून 2021 मे पहली बार यूरोपीय संघ की नौ सेना के साथ अदन की खाड़ी में एंटी पायरेसी अभियान के संयुक्त नौ सेना युद्धाभ्यास किया[xix]

दिसम्बर 2022 में भारत ने समुद्री डकैती विरोधी विधेयक पारित किया जो इससे निपटने के लिए एक प्रभावी कानून प्रदान करता है, यह भारत के अन्यय आर्थिक क्षेत्र की सीमाओं से परे लगभग 200 समुद्री मील के क्षेत्र पर लागू होता है। समुद्री सुरक्षा अभियानों के तहत भारतीय नौ सेना इस क्षेत्र में व्यापक निगरानी कर रही है, भारत सोमालिया तट पर समुद्री डकैती पर संपर्क समूह के माध्यम से सक्रिय रूप से सहयोग कर रहा है। अरब सागर में गश्त पर तैनात आई०एन०एस० कोलकत्ता ने 40 घंटे से अधिक समय तक चलने वाले तलाशी अभियान के बाद मार्च 2024 को सोमालिया डाकुओं से मालवाहक जहाज एमवी रूएन को बचाया था, जिसका 2023 में अपहरण किया गया था इस अभियान में पकड़े गये 35 समुद्री डाकुओं पर इस कानून के तहत कार्रवाई की जायेगी[xx] भारत रीकैप [Recaap] के माध्यम से एशिया में जहाजो के विरूद्ध समुद्री डकैती और सशस्त्र डकैती से निपटने के लिए क्षेत्रीय सहयोग समझौता संगठन में भागीदारी करता है। जिसमें 16 देश शामिल है

भारत ने हिन्दमहासागर के महत्वपूर्ण चोकप्वाइटों पर अपने सुरक्षा संबंधों को मजबूत करने पर ध्यान दिया है, हिन्दमहासागर में बढ़ती भारत की नौ सैनिक उपस्थिति महत्वपूर्ण व्यापार मार्गो पर सुरक्षा और संरक्षण के प्रति उसकी प्रतिबद्धता को दर्शाती है। लम्बी तटरेखा और कई बन्दरगाहों के साथ भारत समुद्री मार्गो के माध्यम से मादक पदार्थो की तस्करी के लिए संवेदनशील है, क्योंकि भारत गोल्डन क्रिसेंट और गोल्डन ट्रांइएगल जैसे प्रमुख उत्पादन व विक्रेता केन्द्रो से घिरा हुआ है इनका प्रमुख सप्लाई मार्ग भारत के तटीय क्षेत्रों से गुजरता है। भारत ने 2024 के सबसे बडे पॉच अभियानों में लगभग 9600 किग्रा की जब्ती की जो पिछले पॉच सालों 7600 किग्रा की तुलना में कई अधिक हैं[xxi] यूएसओसीडी के अनुसार मादक पदार्थो के लिए भारत दक्षिण एशिया में मुख्य गंतव्य बाजार और चीन को दक्षिण पूर्व व पूर्वी एशिया में सबसे बडा संभावित राजस्व स्रोत माना गया है। मादक पदार्थो की तस्करी को रोकथाम के लिए भारतीय तट रक्षक बल व नौ सेना नियमित रूप से हिन्दमहासागर में विचरण करती है, 19 अप्रैल 2021 में पाकिस्तान से आये श्रीलंकाई मछली पकडने वाले जहाजो से 3000 करोड की मादक पदार्थ की जब्ती कर अरब सागर में होने वाली तस्करी पर रोक लगाई। भारत सरकारी एंजेसियों, समुद्री संगठनों और निजी क्षेत्र की संस्थाओं सहित हितधारको के बीच सूचना के बीच सूचना के आदान प्रदान और विश्लेषण को सक्षम करके समुद्री सुरक्षा को बढाने में महत्वपूर्ण है।

© 2026 डॉ० अतुल चन्द, राहुल खत्री. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

समुद्र में बढते जलवायु परिवर्तन की रोकथाम व उससे होने वाली घटनाओं से बचाव व रोकथाम के लिए भारत ने काफी कदम उठाये हैं, भारत Indian ocean observation system(indOOS) के माध्यम से समुद्री जलवायु परिवर्तन की निगरानी, आपदा प्रबंधन और मौसम पूर्वनुमान को लेकर डेटा एकत्र करता है यह एक बहुसंस्थागत महासागर निगरानी यंत्र है जो 22 देशों द्वारा चलाया जाता है। भारतीय राष्ट्रीय समुद्री सूचना सेवाएं केन्द्र (INCOIS) के तहत महासागर से सम्बन्धित डेटा संग्रह, विश्लेषण सेवाएं प्रदान करना है। जिससे मछुवारों, नौवहन, रक्षा और आपदा प्रबंधन में इसका लाभ लिया जा सकें।

हिन्दमहासागर क्षेत्र में भारतीय नौ सेना द्वारा सुरक्षा व सहयोग को बढावा देने के लिए हिन्दमहासागर के लिए सूचना संलयन केन्द्र की स्थापना की जो उन राष्ट्रों के साथ सूचना साझा करता है जिनका भारत के साथ व्हाइट शिपिग समझौता किया हो जिसमें 12 देश शमिल हैं। जो महत्वपूर्ण सूचनाओ का आदान प्रदान करता है IFC-IOR में 14 देशों के सूचना संपर्क अधिकारी है। इसका मकसद समुद्री डोमेन जागरूकता को बढाना तथा सूचना साझाकरण, सहयोग और दक्षता विकास के माध्यम से गतिविधियों का समन्वय करना है।
भारत पर्यवेक्षक के रूप में 26 अगस्त 2020 को जिबूती आचार संहिता(जेद्दा संसोधन) में शामिल हुआ, इसमें हिन्दमहासागर के 18 देश शामिल हैं। इसमें भारत का शामिल होना हिन्दमहासागर में समुद्री सुरक्षा में भारत की भूमिका को और मजबूत करता है। जिबूती आचार सहिता पश्चिमी हिन्महासागर और अदन की खाडी में समुद्री चोरी और सशस्त्र डकैती पर रोक के विषय से सम्बन्धित एक आचार संहिता है[xxii] भारत IORA का संस्थापक सदस्यों में से है जिसके माध्यम से भारत सदस्य राष्ट्रों के साथ मिलकर एक मुक्त समुद्री सुरक्षा तंत्र का निर्माण कर रहा है भारत ने इसके माध्यम से समुद्री डोमेन जागरूकता व नीली अर्थव्यवस्था के क्षेत्र की ओर विशेष ध्यान दे रहा है। प्रोजेक्ट मौसम भारत सरकार के नौवहन और जलमार्ग मंत्रालय की एक रणनीतिक पहल है, जिसका उद्देश्य बन्दरगाह आधुनिकीकरण, तटीय सुरक्षा, आर्थिक सहयोग के द्वारा क्षेत्रीय सहयोग और स्थिरता में वृद्धि करना हैं।

साइबर हमलों के विरूद्ध भारत तटीय रडार स्टेशनों के नेटवर्क का विस्तार करके तथा उन्नत उपग्रह प्रणाली आधारित निगरानी को एककृीत करके अपनी क्षेत्र जागरूकता क्षमताओं को बढा रहा है। फरवरी 2022 में जवाहर लाल नेहरू पोर्ट ट्रस्ट पर रैनसमवेयर हमला[xxiii] और मई 2023 कोचिन शीपयार्ड पर हैकर ग्रुप द्वारा हमला किया गया यह पोर्ट साउथ नेवल कमांड से जुडा हुआ हैं। यह हमला उच्च जोखिम वाला माना गया। इसके लिए भारत ने साइबर सुरक्षा के लिये एक अलग डायरेक्टरेट Directorate of naval cyber operations की स्थापना की और भारत ने नवम्बर 2020 में मैरीटाइम इडिया विजन 10 वर्षीय रणनीतिक योजना लॉच की जिसके तहत समुद्री क्षेत्रों की सुरक्षा में व्यापक सुधार लाया जा रहा है। हिन्दमहासागर नौ सैन्य संगोष्ठी(IONS) भारत द्वारा 2008 से गठित एक मंच है, जो तटीय राज्यों की नौ सेना को एक साथ लाती है। जो क्षेत्र में समुद्री सहयोग व सुरक्षा परस्पर विश्वास को बढावा देता है। जो प्राकृतिक आपदाओं के विरूद्ध एक प्रतिक्रिया तंत्र तथा मानवीय सहायता व आपदा राहत सुनिश्चित करने का भी कार्य करता है। यह समुदी डोमेन जागरूकता व साइबर सुरक्षा पर मंच साझा करता है।

निष्कर्ष

हिन्दमहासागर की समुद्री संचार लाइनों को विश्व की आर्थिक व रणनीतिक जीवन रेखा कहा जाता है। हिन्दमहासागर दशकों से क्षेत्रीय संघर्ष से ग्रसित रहा है और वैश्विक महाशक्तियों के लिए यह क्षेत्र ऊर्जा आपूर्ति के साथ शक्ति प्रतिस्पर्धा के साथ शक्ति सन्तुलन का प्रमुख रणनीतिक केन्द्र बिन्दु रहा है। चीन और अमेरिका के मध्य नये शीत युद्ध का केन्द्रीय स्थल हिन्दमहासागर बना हुआ है। पहले से ही अस्थिर इस क्षेत्र में चीन अमेरिकी प्रतिस्पर्धा व राष्ट्रो के मध्य असुरक्षा के भाव ने क्षेत्र को एक सैन्य टकराव व विनाश की ओर धकेला है और हिन्दमहासागर क्षेत्र के सैन्यीकरण, सैन्य संघर्ष, आंतकवाद, डकैती, अवैध तस्करी जैसे पारम्परिक व गैर पारम्परिक समुद्री खतरों को प्रोत्साहन दिया है। हिन्दमहासागर क्षेत्रीय राष्ट्रों के गैर पारम्परिक समुद्री खतरों का प्रमुख कारण क्षेत्र में राजनैतिक अस्थिरता, निरंकुश सरकार, शक्ति प्रतिस्पर्धा तथा महाशक्तियों का दवाबपूर्ण हस्तक्षेप रहा है। जिसने क्षेत्रीय सुरक्षा के साथ ही गैर राज्य हिंसक तत्वो को उभरने का मौका भी दिया है। प्रथमत क्षेत्रीय राष्ट्रों को अपने हितों के अनुकूल शांति स्थिरता व एक लोकतांत्रिक सरकार का निर्माण करना होगा। समुद्री सुरक्षा व चुनौती से बचाव के लिये स्व प्रयास बेहद जरूरी हैं और साथ ही क्षेत्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के साथ संयुक्त कार्यवाही हेतु अपनी भूमि में अवैध गतिविधियों को रोकना होगा। हिन्दमहासागर के क्षेत्रीय राष्ट्रों में शांति ही समुद्री सुरक्षा व संरक्षा का भविष्य निर्धारित करती है। हिन्दमहासागर की विशाल सीमाए, निगरानी तंत्र, कमजोर तटीय व्यस्वथा व क्षेत्रीय शांति के लिये सिर्फ सैन्य विकल्प ही उपयोगी नही है बल्कि बहुपक्षीय सहयोग, क्षेत्रीय साझेदारी और एक सयुक्त समुद्री शासन तंत्र की जरूरत है।

सन्दर्भ सूची

[i] https://timesofindia.indiatimes.com/india/how-navy-rescued-a-vessel-hijacked-by-35-somali-pirates/photostory/108589153.cms 18 mar 2024

[ii] https://www.fbi.gov/history/famous-cases/uss-cole-bombing - uss cole boming

[iii] https://www.reuters.com/graphics/ISRAEL-PALESTINA/SHIPPING-ARMS/lgvdnngeyo/ -8mar 2024

[iv] https://www.nypost.com/2024/09/27/us-news/navy-intercepts-houthi-barrage-of-

© 2026 डॉ० अतुल चन्द, राहुल खत्री. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

missiles-drone-launched-at-three-us-warships-in-the-red-sea/ 27 sep 2024

[v] https://www.unodc.org/islamicrepublicofiran/en/unodc-world-drug-report-2024_-harms-of-world-drug-problem-continue-to mount-amid-expansions-in-drugs-use-and-market.html 26 june 2024

[vi] https://www.ungeneva.org/en/news-media/news/2023/12/88489/Myanmar-overtakes-afghanistan-woeds-top-opium-producer dec 2023

[vii] https://www.aljazeera.com/news/2025/5/29/methamphetamine-trafficking-surges-from-golden-triangle-region 29 may 2025

[viii] Afghanistan drug insights vol-2, 2024 opium production and rural development pg-17, nov 2024

[ix] https://www.aljazeera.com/amp/news/2023/1/10/us-navy-says-it-seized-iran-assault-rifles-bound-for-yemen , 10jan2023. aljazeera

[x] https://indianexpress.com/article/cities/Ahmedabad/heroin-and-arms-seized-from-pakistan-boat-were-sent-by-balochistan-drug-lord-8347817/

[xi] Ipcc, climate change2021; the physical science basic summary for policymakers, oct 2021 pg 15

[xii] Ground report, https://www.groundreport.in/climate-change-2/ocean-surface-climate-may-disappear-by-2100-study 28 august 2021

[xiii] https://www.google.com/amp/s/hindi.downtoearth.org.in/amp/story/climate-change/rapid-warming-of-the-indian-ocean-will-increas-destructive-events-study-warns-95855

[xiv] UNDRR https://www.undrr.org/resource/southern-africa-cyclone-2023-forensic-analysis 12sep 2024

[xv] https://www.unodc.org/eastrenafrica/en/stories/tackling-illegal—unregulated-fishing-in-somalia.html? mar 2023 unodc

[xvi] IMO, https://www.imo.org/en/ourwork/security/pages/cyber-security.aspx

[xvii] https://www.wired.com/story/sandworm-russia-cyberattack-link/

[xviii] The indian express https://www.newindianexpress.com/cities/delhi/2024/mar/india-will-ramp-up-assets-to-secure-indian-ocean-region-says-navy-chief 24 mar 2024

[xix] Raksha mantralya , https://www.pib.gov.in/pressreleasepage.aspx?PRID=1728386 18 june by PIBdelhi

[xx] The hindu, https://www.thehindu.com/news/national/warships-ins-kolkata-carrying-35-pirates-apprehended-off-somalia-coast-reaches-mumbai/article67983353.ece 23 mar 2023

[xxi] Dw, https://www.google.com/amp/s/amp.dw.com/hi/drugs-overflow-in-indianwater/a-70901877 29/11/2024

[xxii] Orf hindi, https://www.orfonline.org/hindi/expert-speak/-indias-first-nomation-in-the-indian-ocean-region-through-the-djibouti-code-of-conduct1 17 oct 2020

© 2026 डॉ॰ अतुल चन्द, राहुल खत्री. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

[xxiii] The diplomat https://thediplomat.com/2024/02/maritime-cybersecurity-an-emerging-area-of-concern-for-india/ 09feb2024

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution–Non-commercial–No Derivatives 4.0 International (CC BY-NC-ND 4.0) license. This license permits sharing and redistribution of the article in any medium or format for non-commercial purposes only, provided that appropriate credit is given to the original author(s) and source. No modifications, adaptations, or derivative works are permitted under this license.

About the Crossponding Author

Dr. Atul Chand is an Assistant Professor of Defence and Strategic Studies at Government Degree College, Baluwakote, Pithoragarh, Uttarakhand. His research focuses on cyber warfare, artificial intelligence, and international security. He has published over 47 research papers, authored books, guided doctoral scholars, and contributed significantly to academic administration and digital education.

© 2026 डॉ॰ अतुल चन्द, राहुल खत्री. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/